Bharat Temples

हे कृष्ण कहाँ हो आओ तुम

हे कृष्ण कहाँ हो आओ तुम, क्यूँ भूल गये गौ-माता को,
बसते हैं जिसके रोम-रोम, सब देव 'पुनीत-सुजाता' को,

वृन्दावन में ग्वालों के सँग, ले गौएँ भटके वन-वन में,
सहलाते थे निज हाथों से, यमुना-तीरे वन-उपवन में,

सिहरन कर गौधन निज तन में, करती थीं प्रकट भाव अपने,
किन्तु अब-वे, अनुभव उनको, बनकर रह गये निरा सपने,

कह रँभा-रँभा अम्मा बछड़े, जब माँ के पहलू आते थे,
तब देख दृष्य़ वह मनमोहन ! तुम कितने खुश हो जाते थे,

तुम मुरली तान सुनाते थे, वे दौड़ी-दौड़ी आती थीं,
पा दर्शन तेरे मनमोहन, निज-को वे सुरक्षित पाती थीं,

निज हाथों उनको तृप्त किया, द्वापर-युग में बनकर ग्वाला,
इस कारण जग में नाम पड़ा, हे कृष्ण !तुम्हारा गोपाला,

क्या हुआ तुम्हारी मुरली को, क्यों नहीं सुनाई देते स्वर,
कानों के दोनें घुमा-घुमा, आतुर हैं सुरीले सुनने स्वर,

अब कोइ करे न परिचर्या, न कोइ उन्हें सहलाता है,
कर झूठा अभिनय सेवा का, नर धेनु-भक्त कहलाता है,

अब मेरी बातें सुनो 'श्याम' तुम !कभी-कभी मिल पाते हो,
मन की दो बातें तो कहलूँ, हे श्याम ! कहाँ तुम जाते हो,

ऐसी क्या जल्दी जाने की, माना कि काम बहुत होंगे,
कुछ देवों के कुछ मनुज-दनुज, कुछ तिर्यक-योनि के होंगे,

जो पावन गौएँ बसती थीं, हे कृष्ण ! निरन्तर आप हृदय,
सुनते जाओ उनके दुर्दिन, मुरलीधर ! तुमसे यही विनय,

हे श्याम ! दुर्दशा गौओं की, अब देखी-सुनी नहीं जाती,
तेरे इस जग की रीति-नीति, अब सत्पुरुषों को न भाती,

इस कलियुग में अब लोगों को, उनके पालन में रुचि नहीं,
रहने को जगह नहीं उनको, गौ-शाला दिखती नहीं कहीं,

गोबर गौमूत्र से घृणा करें, ऐसी निष्कृष्ट सोच जिनकी,
तब कौन उन्हें बाँधे-छोरे, अरु कौन करे सेवा उनकी,

वे खुले आसमां के नीचे, भूखी-प्यासी रह जाती हैं,
हो ठंडी गरमी या वारिस, कुछ ऐसे ही मर जाती हैं,

गोचर भूमि पर काबिज़ हैं, ये मानव मन-के-मतवारे,
चरने की इनको जगह नहीं, ये जायँ कहाँ गिरधर-प्यारे,

अपना दाना तो ले आते, खेतों खलिहानों से मानव,
पर पशुओं का चारा-भूसा, कुछ-भी न लाते घर मानव,

हो रहा विनाश पहाड़ों का, नित खनिज काष्ठ पाषाण के हित,
मानव कहता जिसको विकास, हे श्याम !सर्वथा है अनुचित,

मानव की त्रुटियों से कान्हाँ, वन घास-पात से हीन हुए,
नाले सर-सरिता बावड़ियाँ, मनमोहन ! नीर विहीन हुए,

वे फिरती हैं मारी-मारी, तेरे जग में भूखी-प्यासी,
क्यूँ आती नहीं दया तुझको, दुर्दशा देख हे सुख-रासी,

हैं कुछ बातें ऐसीं जिनको, कहने में छाती फटती है,
तुम खुद आकर देखो कान्हाँ !गौ कैसे आज सिसकती है,

यदि ऐसा हाल रहा कान्हाँ ! तो दूध कहाँ से पायेंगे,
घी मावा छाछ दही माखन, हे श्याम ! कहाँ से पायेंगे,

नवनीत घरों में न होगा तब, क्या तुम श्याम चुराओगे,
फिर कैसे मुनि-जन राधाप्रिय ! तुम माखन-चोर कहाओगे,

जब भोग लगेगा माखन का, तब तुम कह दोगे नकली है,
फिर हम कैसे कह पायेंगे कि, नहीं श्याम ! ये असली है,

अब तूँही जानें हे गुपाल !कह दिया जो कहना था मुझको,
अब बारी है तेरी 'अशोक' तूँ जानें जो करना तुझको,

अब बारी है तेरी 'अशोक' तूँ जानें जो करना तुझको,

(रचना- अशोक कुमार खरे)

Source:
https://www.bharattemples.com/he-krishan-kaha-ho-aao-tum-kyu-bhul-gaye-go-maata-ko/

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw